सच कहने की ताकत

जालंधर ब्रीज

साप्ताहिक समाचार पत्र

• JALANDHAR BREEZE • WEEKLY • YEAR-2 • 19 AUGUST TO 25 AUGUST 2020 • VOLUME- 4 • PAGES- 4 • RATE- 3/- • www.jalandharbreeze.com • RNI NO.:PUNHIN/2019/77863

Lic No : 933/ALC-4/LA/FN:1184

INNOVATIVE TECHNO INSTITUTE

INNOVATIVE TECHNO INSTITUTE CONSULTING | DESIGN | TRAINING

ISO CERTIFIED 2015 COMPANY

STUDY, WORK & SETTLE IN ABROAD

Low Filing Charges &
*Pay money after the visa

IELTS | STUDY ABROAD

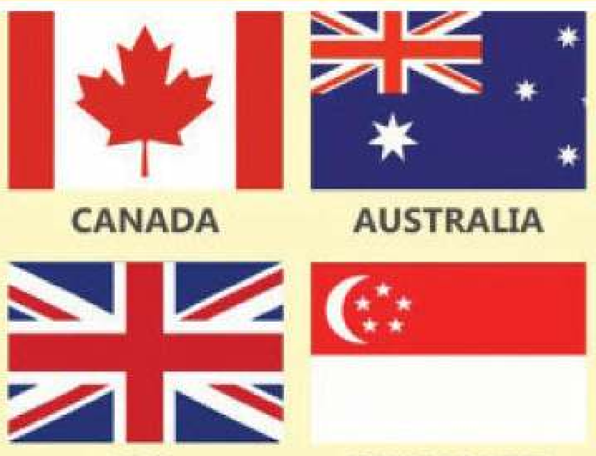

*T&C apply

E-mail : ankush@innovativetechin.com • hr@innovativetechin.com • Website : www.innovativetechin.com • FB/Innovativetechin • Contact : 9988115054 • 9317776663

REGIONAL OFFICE : S.C.O No. 10, Gopal Nagar, Near Batra Palace, Jal. • HEAD OFFICE : S.C.O No. 21-22, Kuldip Lal Complex, Highway Plaza, GT Road, Adjoining Lovely Professional University, Phagwara.

अड़ियल रवैया छोड़ने को तैयार नहीं चीन

जाड़े तक पीछे हटने की संभावना कम, भारतीय सैनिकों ने भी कसी कमर

• नई दिल्ली/ब्यूरो

भारत-चीन के बीच जारी सीमा विवाद समाप्त होने का नाम ही नहीं ले रहा है। पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर गतिरोध को समाप्त करने की कोशिश के लिए इस हफ्ते राजनयिक स्तर पर बातचीत होने की संभावना नजर आ रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक भारत ने चीन को कड़ा संदेश देते हुए कहा है कि वह पूर्वी लद्दाख में एलएसी से चीनी सैनिकों को पीछे भेजने और यथास्थिति को बहाल करने की अपनी मांग को जारी रखेगा। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक इस हफ्ते वर्किंग मैकेनिजम फॉर कंसल्टेशन एंड कॉर्डिनेशन ऑन इंडिया-चीन बॉर्डर (डब्लूएमसीसी) की बैठक की तैयारी है। इस बैठक से पहले सेना के वरिष्ठ अधिकारियों और राजनीतिक अधिकारियों के बीच बैठक हुई। जिसमें यह तय हुआ कि किस तरह से बिंदुओं पर जोर दिया जाना है।

सूत्रों के मुताबिक चीनी सैनिक अभी जाने की दशा में नजर नहीं आ रहे हैं और उनकी तैयारियां देखकर यह भी प्रतीत हो रहा है कि वह जाड़े में भी डटे रहने की तैयारियों के साथ आए हैं। हालांकि, भारतीय सैनिकों ने भी अपनी कमर कस ली है और इस ऊंचाई वाले इलाके से चीनी

सैनिकों को धकेलकर ही दम लेंगे।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक चीन से साथ जारी तनातनी को लेकर सोमवार को सेना, विदेश मंत्रालय और रक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों ने एक बैठक की। इस बैठक के बाद एक अधिकारी ने बताया कि एलएसी का मुद्दा सिर्फ बातचीत से हल होने योग्य नहीं है। जब तक चीनी सैनिक पूरी तरह से पीछे नहीं हट जाते हैं तब तक हमारे जवान भी डटे रहेंगे। बता दें कि भारत और चीन के बीच सीमा विवाद को सुलझाने के लिए पांच दौर की सैन्य वार्ता हो चुकी है। फिर भी चीन अपने अड़ियल रवैये को छोड़ने के लिए तैयार नहीं दिख रहा है। जिसको ध्यान में रखते हुए भारतीय सेना ने भी तैयारियां पूरी कर ली हैं। नवंबर में लद्दाख के हालात बिगड़ने लगते हैं। आखिरी-आखिरी में यहां का तापमान माइनस 40 से 45 डिग्री तक पहुंच जाता है। चीन ने भले ही टेंट गाड़ लिया हो लेकिन क्या वह माइनस 40 डिग्री तापमान को झेलने के लिए तैयार हैं ?

सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक भारतीय सेना ने भी एलएसी के पास कई नई पोस्ट बनाई है। ताकि वह चीन की हर हरकतों पर नजर रख सकें। हालांकि, भारतीय सैनिकों को ठंड से बचाने के लिए पर्याप्त इंतेजाम भी किया जा चुका है।

Dream-11 बना आई.पी.एल. 2020 का टाइटल स्पॉन्सर, 222 करोड़ में खरीदे राइट्स

• नई दिल्ली/ब्यूरो

फंतासी खेल प्लेटफॉर्म ड्रीम11 ने चीनी कंपनी वीवो की जगह लगभग साढे चार महीने के करार के लिए 222 करोड़ रुपये की बोली के साथ इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) का टाइटिल प्रायोजन अधिकार हासिल किया। ड्रीम 11 पहले से ही पिछले कुछ वर्षों से आईपीएल के प्रायोजन से जुड़ा है। आईपीएल अध्यक्ष बृजेश पटेल ने बताया, ''ड्रीम11 ने 222 करोड़ रुपये की बोली के साथ अधिकार हासिल किया है।'' यह पता चला कि टाटा समूह ने अंतिम बोली नहीं लगाई जबकि दो शिक्षा प्रौद्योगिकी कंपनियां बायजूस (201 करोड) और अनएकेडमी (170 करोड़) क्रमश: दूसरे और तीसरे स्थान पर रहें। भारत और चीन के बीच सीमा पर गतिरोध के कारण वीवो और बीसीसीआई ने इस सत्र के लिए प्रति वर्ष 440 करोड़ रुपये के करार को निलंबित कर दिया था।

क्या कांग्रेस की सरकार को अफसरों ने बनाया है या आम जनता ने

अवैध कालोनियों में राजीनामा योग्य निर्माण के गलत रेट लगाकर लोगों को किया जा रहा गुमराह

जालंधर ब्रीज द्वारा पिछले अंक में जन हित के लिए प्रकाशित की गई खबर

•जालंधर ब्रीज की विशेष रिपोर्ट

पंजाब में कांग्रेस की सरकार को तीन साल से ज्यादा हो चुके है परन्तु ऐसा लग रहा है की सरकार अभी भी अकाली दल ही चला रहा है यह सब का प्रमाण लोगों को मांगने की जरुरत नहीं है इस बात को बल तब ही मिल गया था जब अकाली भाजपा सरकार में मलाईदार सीटों पर विराजमान रह कर कांग्रेसी वर्करों को जो अफसर दो-दो घंटे बिठा कर उनको लज्जा महसूस करवाते थे उन्हीं में से एक अफसर को इनाम के तौर पर मुख्यमंत्री द्वारा अपने शहर मे ऊँची पदवी पर बिठाया और फिर एक शहर का जिलाधीश लगाया और उसी के बाद अपने ही कार्यकाल में ऊँचे पद पर अमृतसर जैसे शहर में तैनाती की इसकी एक नहीं अनेकों उदहारण आपको मिल जाएँगे। जिसमें मुख्यत से अकाली नेता के एक ही परिवार के दो अफसरों को पुडा जैसे बहुमूल्य विभाग की जिम्मेवारी एक ही परिवार जो की अकाली दल से संबंधित रखता हो उसको इतने बड़े विभाग की बागडोर

देना एक बार फिर पंजाब में परिवारवाद को बढ़ावा देने का काम कर रहा है जिसके कारण कांग्रेसी वर्करों में काफी रोष देखने को मिल रहा है जिन लोगों ने कांग्रेस की सरकार बनाने में अहम भूमिका निभाई है उसमे सबसे बड़ा योगदान प्रॉपर्टी कारोबार से संबंधित लोगों का परन्तु वह सब भी अफसरों की मनमानियों से तंग परेशान आ चुके है जिसका एक उदाहरण पुडा के अस्टेट अफसर द्वारा चेहरु-मेहरु गांव में बसी कॉलोनियों में बनी इमारतों से राजीनामा योग्य बनती रकम की गलत वसूली के नोटिस लोगों से गलत कीमतों पर वसूली करने के आरोप लग रहे है जिसमे उसके साथ निचले अफसरों के साथ मिलीभगत करके लोगों को डरा कर उनसे मोटी कीमतों के नोटिस भेजकर उनसे मोटी रिश्वत की वसूली कर सरकार को चुना लगाया जा रहा है। वहीं सरकार अपना वित्तीय घाटा लोगों को शराब बेचकर पूरा कर रही है अगर विभाग के मंत्री और उच्च अधिकारी इस और ध्यान दे तो जो तकरीबन 400 नोटिस विभाग के एस्टेट अफसर द्वारा निकाले गए है और उसमें भी अभी वसूली दो या तीन से ही की गयी है यह सब अफसरों की कार्यशैली पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करता है की जालंधर डेवलपमेंट अथॉरिटी के हेड ऑफ डिपार्टमेंट के लिए तुरंत एक सूझवान अफसर की जरुरत है जो सरकार की और से जो मंजूरी चाहिए अपने उच्चाधिकारियों से तालमेल बिठाकर लोगों की समस्या का हल करवा सके नहीं तो पूर्व उपमुख्यमंत्री अपनी सरकार में ना होने के बावजूद भी स्टेज से अपनी लाल डायरी दिखाकर ही अफसरों से सरकार में ना होने के बावजूद अपने काम करवा रहा है और कांग्रेसी वर्कर पहले अकाली भाजपा सरकार में अफसरों से डंडे खाते रहे और अब अपनी सरकार में अपने आप को ठगा महसूस कर रहे है और जल्द ही ऐसे अफसरों को ना बदला गया तो केंद्र में अपना वजूद खो चुकी कांग्रेस जल्द ही पंजाब में भी हाशिये पर चली जाएगी।

अभी आधा असर हुआ पूरा कुछ ही दिनों में हो जाएगा

•जालंधर ब्रीज की विशेष रिपोर्ट

लोगों के पैसों की बर्बादी जिस तरह नेशनल हाईवे विभाग द्वारा की गई शायद ही इतने बढ़े स्तर में किसी और विभाग में धांधली हो। इसका एक उदहारण नहीं अनेकों पूरे पंजाब राज्य में देखने को मिल जाएँगे जिस प्रकार हाथी के दाँत दिखाने के कुछ और चबाने के कुछ होते है। उसी तरह यह विभाग की कार्यशैली पर भी कई बार प्रश्नचिन्ह लगते रहे है जिसको लोगों की आवाज़ बनने का

छाया : रवि

अफसर हो गये मालामाल फुटओवर ब्रिज को पड़े-पड़े लग गया जंगाल

जालंधर ब्रीज द्वारा पिछले अंक में उठाया गया फुटओवर ब्रिज का मुद्दा

काम जालंधर ब्रीज अखबार द्वारा पिछले कई अंकों से करता आ रहा है इसी विस्तार में एक और मुद्दे का हल करवाने का प्रयास किया जा रहा है जिसमें देश के प्रमुख इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्रों की जान की हिफाजत के लिए सड़क पार करने के लिए विभाग द्वारा पिछले कई वर्षों से उसे जंगाल लगने के लिए सड़क पर बनाकर छोड़ दिया गया था उसको प्रमुखतय से विभाग के समक्ष अपने समाचार पत्र के माध्यम से उठाया जिसका परिणाम लोगों और पढ़ रहे छात्रों की सुरक्षा की हिफाज़त करने का प्रयास किया।

स्मार्ट सिटी योजना को कौन विफल कर रहा है जाँच का विषय

जालंधर स्मार्ट सिटी दफ्तर के अंदर की दयनीय हालात।

इंटरसेक्शन पर फ्लैटों की तरफ से परपेंडिकुलर एक्सेस देकर उसको दुर्घटना क्षेत्र बना दिया

•जालंधर ब्रीज की विशेष रिपोर्ट

केन्द्र की भाजपा सरकार द्वारा शुरू की गयी शहरों को आधुनिक सुविधाओं से लिप्त करने के लिए योजना को जमीनी स्तर पर पूरा करने के लिए अफसर पूरी तरह से विफल साबित हुए है जिसका मुख्य कारण किसी सूझवान अफसर का ना होना।

पिछले तकरीबन 4 वर्षों से जितनी भी योजनाओं को शुरू किया गया या शुरू करने के लिए प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाई गयी वो सब किताबों

छाया : रवि

मौजूदा सड़क से कुछ इंच ही उठाकर कर्ब स्टोन लगा दिया और सड़क की चौड़ाई भी कम कर दी गयी

या कागज़ों तक ही सिमित रह गयी जिससे लोगों द्वारा अपने खून पसीने से की मेहनत से कमाए हुए पैसे से बनते टैक्स की जो अदाएगी की उसको बर्बाद किया जा रहा है।

जिसका जालंधर ब्रीज द्वारा अपने पिछले अंक में इस मुद्दे को उठाकर प्रशासन को जगाने का काम किया था जिस पर पूर्व सी.इ.ओ ने आश्वस्त किया था की जल्द ही शुरू किए हुए कामों को पूरा कर लिया जायेगा जिसमे मुख्यते शुरू किये हुए चौंकों के नवीनीकरण को लेकर की गई खामिआं को भी दुरुस्त करने का आश्वासन दिया गया था परन्तु जमीनी स्तर पर हर किया हुआ वादा खोकला साबित हुआ जिसका एक उदहारण आपको वर्कशॉप चौंक पर डिजाइनिंग में की गयी नालयकीयों के कई उदहारण आपको मिल जायेंगे ।

जिसमे इंटरसेक्शन पर फ्लैटों की तरफ से परपेंडिकुलर एक्सेस देकर उसको दुर्घटना क्षेत्र बना दिया और फुटपाथ का लेवल मौजूदा सड़क से कुछ इंच ही उठाकर कर्ब स्टोन लगा दिया जिससे हैवी वाहन कभी भी उसके ऊपर चढ़ कर तोड़ देंगे इसके लिए किसी सूझवान अफसर की जरूरत है परन्तु अभी तक तो कोई सरकार ने किसी सूझवान अफसर की तैनाती तो की नहीं है जो इस योजना को पुणे विशाखापट्नम की तर्ज़ पर जालंधर को भी आधुनिक शहर बना सके लोग भी इस शहर में रहने पर गौरवांतित महसूस करे पहले इस योजना को पूर्व भाजपा के मेयर ने ही नाकाम किया अब मौजूदा सरकार के अफसर कोई कसर नहीं छोड़ रहे

धीमी गति से चल रहा स्मार्ट सिटी प्रोजैक्ट लोगों के लिए बना सिरदर्दी

केंद्र की योजनाओं को जालंधर के अफसर सुचारू ढंग से लागू करवाने में असमर्थ

जालंधर ब्रीज द्वारा अपने पिछले अंक में इस मुद्दे को उठाकर प्रशासन को जगाने का काम किया था

हैं । यह चीज़ आपको स्मार्ट सिटी योजना के लिए बनाये गए दफ्तर के हालात को देखकर पता लग जाएगी की जिनके खुद के दफ्तर में इतनी गंदगी है वह पूरे शहर को स्मार्ट कैसे बनाएंगे।

दखल

बाढ़, भूस्खलन और हमारी नीतियां

यदि स्थानीय समुदायों की भागीदारी से बाढ़ व भू-स्खलन के विभिन्न पक्षों की सही समझ बनाई जाए और इन आपदाओं को कम करने के लिए बहुपक्षीय उपाय किए जाएं, तो बाढ़ व भू-स्खलन नियंत्रण से कहीं बेहतर सफलता प्राप्त हो सकती है। मगर सवाल यह है कि इस ओर पहल करे कौन। देश हर साल बाढ़ और भूस्खलन जैसी आपदा से दो-चार होता है, मगर मुकम्मल व्यवस्था की किरण आज तक नहीं दिखी है।

दुनिया और देश दोनों के स्तर पर यह चिंता बढ़ रही है कि बाढ़ और भू-स्खलन से बचाव पर अपार धनराशि खर्च करने के बाद भी इन दोनों आपदाओं से होने वाली तबाही बढ़ रही है। बाढ़ नियंत्रण उपायों में आखिर ऐसी क्या कमी है, जिसके कारण यह संकटपूर्ण स्थिति उत्पन्न हुई है, इस सवाल का जवाब खोजना जरूरी है, ताकि हम बेहतर, अधिक सफलता की संभावना वाली नीतियों की ओर बढ़ सकें। यह चिंतन इस कारण और भी आवश्यक हो गया है, क्योंकि हम जलवायु बदलाव के दौर में पहुंच चुके हैं और इस दौर में कम समय में अधिक वर्षा केंद्रित होने की संभावना व्यक्त की गई है। दूसरे शब्दों में, हमें बाढ़ के संकट का अधिक सामना करने के लिए पहले से भी और तैयार रहने की जरूरत है। बाढ़ के खतरे की संभावना वाले किसी भी क्षेत्र के लोगों को सबसे पहला बचाव का उपाय प्रायः यही नजर आता है कि उनके क्षेत्र को नदी से बचाने के लिए एक दीवार या तटबंध बना दिया जाए। इसका आसपास के अन्य इलाकों पर क्या असर होगा, या दस-बीस वर्ष बाद उनके अपने गांव या बस्ती पर क्या असर होगा, प्रायः इस बारे में अधिक विचार उस समय नहीं किया जाता है।

इसी तरह एक अधिक व्यापक क्षेत्र को बाढ़ से बचाने का सवाल आता है, तो प्रायः यह कहा जाता है कि नदी के ऊपर के क्षेत्र में बांध बना कर वहां अतिरिक्त पानी रोक दिया जाए। पर इस प्रक्रिया में जो अनेक पेचीदगियां व समस्याएं हैं, उन पर उस समय अधिक सोचा नहीं जाता। बाद में इन निर्माण कार्यों से अनेक समस्याएं उत्पन्न होती हैं तो एक बार फिर किसी कामचलाऊ उपाय के बारे में सोचा जाता है। यदि इस तरह से कार्य करने के स्थान पर एक अधिक समग्र व दीर्घकालीन, समुदाय-आधारित सोच से काम किया जाए, तो बाढ़ नियंत्रण में सफलता की संभावना बढ़ सकती है। बाढ़ नियंत्रण उपाय के रूप में तटबंधों की अपनी कुछ सीमाएं हैं। दूसरे निर्माण कार्य और रख-रखाव में लापरवाही और भ्रष्टाचार के कारण हमने इनसे जुड़ी समस्याओं को और भी बहुत बढ़ा दिया है। तटबंध द्वारा नदियों को बांधने की एक सीमा तो यह है कि जहां कुछ बस्तियों को बाढ़ से सुरक्षा मिलती है, वहां कुछ अन्य बस्तियों के लिए बाढ़ का संकट बढ़ने की संभावना भी पैदा हो जाती है।

अधिक गाद लाने वाली नदियों को तटबंध से बांधने में एक समस्या यह भी है कि नदियों के उठते स्तर के साथ तटबंध को भी निरंतर ऊंचा करना पड़ता है। जो बस्तियां तटबंध और नदी के बीच फंस कर रह जाती हैं, उनकी दुर्गति के बारे में जितना कहा जाए कम है। ऐसे लोगों के पुनर्वास के संतोषजनक प्रयास बहुत कम हुए हैं। इतना ही नहीं, तटबंधों द्वारा जिन बस्तियों को सुरक्षा देने का वायदा किया जाता है, उनमें भी बाढ़ की समस्या बढ़ सकती है। यदि वर्षा जल के नदी में मिलने का मार्ग अवरुद्ध कर दिया जाए और तटबंध में इस पानी के नदी तक पंहुचने की पर्याप्त व्यवस्था न हो, तो दलदली और बाढ़ की एक नई समस्या उत्पन्न हो सकती है। यदि नियंत्रित निकासी के लिए जो कार्य करना था, उसकी जगह छोड़ दी गई है और सरकारी ढर्रे के चलते उस काम को पूरा नहीं किया गया, तो भी यहां से बाढ़ का पानी बहुत वेग से आ सकता है। तटबंध द्वारा 'सुरक्षित' की गई आबादी के लिए सबसे कठिन स्थिति तो तब उत्पन्न होती है, जब निर्माण कार्य या रख-रखाव उचित न होने के कारण तटबंध टूट जाते हैं और अचानक बहुत-सा पानी उनकी बस्तियों में प्रवेश कर जाता है। इस तरह जो बाढ़ आती है, वह नदियों के धीरे-धीरे उठते जल-स्तर से कहीं अधिक विनाशकारी होती है।

बांध निर्माण से कितनी बाढ़ सुरक्षा हो रही है, इस बारे में भी कुछ सवाल उठाए जाने जरूरी हैं। बांध प्रायः सिंचाई और पनबिजली उत्पादन के लिए बनाए जाते हैं, पर साथ ही उनसे बाढ़ नियंत्रण का महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त होगा, यह भी कहा जाता है। यह लाभ तभी प्राप्त हो सकता है जब अधिक वर्षा के समय बांध के जलाशय में पर्याप्त जल रोका जा सके और बाद में उसे धीरे-धीरे नियंत्रित ढंग से छोड़ा जा सके। लेकिन पहाड़ों में जो वन-विनाश और भू-कटाव हुआ है, उससे जलाशयों में भारी मात्रा में मिट्टी-गाद भर गई है और जल रोकने की क्षमता कम हो गई है। इसी कारण तेज वर्षा के दिनों में पानी भी बहुत अधिक होता है, क्योंकि वर्षा के बहते जल का वेग कम करने वाले पेड़ कट चुके हैं। बांध के संचालन में सिंचाई और पनबिजली के लिए जलाशय को अधिक भरने का दबाव होता है। दूसरी ओर वर्षा के दिनों में बाढ़ से बचाव के लिए जरूरी होता है कि जलाशय को कुछ खाली रखा जाए। दूसरे शब्दों में बांध के जलाशय का उपयोग यदि बाढ़ बचाव के लिए करना है, तो पनबिजली के उपयोग को कुछ कम करना होगा। जब ऐसा नहीं होता है तो जलाशय में बाढ़ के पानी को रोकने की क्षमता नहीं रहती है। ऐसी स्थिति में बहुत सा पानी वेग से एक साथ छोड़ना पड़ता है जो भयंकर विनाश उत्पन्न कर सकता है। और भी कई कारणों से बाढ़ से होने वाली क्षति बढ़ी है।

जैसे, जल निकासी के रास्तों को अवरुद्ध करते हुए नई बस्तियां बसाना (विशेषकर शहरी क्षेत्रों में और शहरीकृत हो रहे क्षेत्रों में), सड़कों, नहरों और रेल मार्गों के निर्माण के समय निकासी की पर्याप्त व्यवस्था न करना, संसाधनों के अभाव या दुरुपयोग के कारण वर्षा से पहले नालों की सफाई जैसे जरूरी कार्य न करना आदि। भू-स्खलन की भी यही स्थिति है कि इससे बचाव पर हो रहे खर्च के बावजूद यह आपदा बढ़ रही है। विज्ञान पत्रिका 'ज्योलोजी' ने हाल में उपलब्ध जानकारी और आंकड़ों के आधार पर दावा किया है कि विश्व में भू-स्खलन के कारण होने वाली मौतों की संख्या वास्तव में पहले के अनुमानों की अपेक्षा दस गुना अधिक हो चुकी है। अधिक भूस्खलन वाले क्षेत्रों में भारत के अनेक पर्वतीय क्षेत्र भी बताए गए हैं। इस ओर विशेष ध्यान देना जरूरी है कि पर्वतीय क्षेत्रों में किन मानवीय कारणों व गलतियों से भू-स्खलन की घटनाएं और इनसे होने वाली क्षति बढ़ी है।

एक बड़ी वजह तो यह है कि विभिन्न निर्माण कार्यों (विशेषकर बांध निर्माण) और खनन के लिए पर्वतीय क्षेत्रों में विस्फोटकों का अंधाधुंध उपयोग किया गया है। इस कारण भू-स्खलन का खतरा बढ़ गया है। इसके अलावा वन-विनाश भी भू-स्खलन के खतरे को बढ़ाने का बड़ा कारण बना है। भू-स्खलन अपने आप में तो बड़ी आपदा है ही, साथ में यह बाढ़ को और उग्र करता है। यदि हिमालय में किसी नदी का बहाव भू-स्खलन के मलबे के कारण रुक जाता है, तो इससे कृत्रिम अस्थायी झील बनने लगती है और जब पानी का वेग अधिक होने से जब यह झील फूटती है, तो प्रलयकारी बाढ़ आ सकती है। यदि स्थानीय समुदायों की भागीदारी से बाढ़ व भू-स्खलन के विभिन्न पक्षों की सही समझ बनाई जाए और इन आपदाओं को कम करने के लिए बहुपक्षीय उपाय किए जाएं, जिनमें अल्पकालीन के साथ दीर्घकालीन जरूरतों को भी ध्यान में रखा जाए, तो बाढ़ व भू-स्खलन नियंत्रण से कहीं बेहतर सफलता प्राप्त हो सकती है। इसके लिए एक समग्र दृष्टिकोण बहुत जरूरी है। सरकारी स्तर पर भी विभागीय कार्यों के बंटवारे से ऊपर उठ कर समग्र सोच अपनानी होगी।

देश में बाढ़ को नियंत्रित करने के लिए नीतियां कई बार बनाई गईं, मगर उन पर क्रियान्वयन नहीं किया गया। 2008 में बिहार में आई बाढ़ ने सरकारी तंत्र की आंखें खोल दी थी, तब तटबंध बनाने और न जाने कितनी व्यवस्थाएं करने पर पानी की तरह पैसा बहाया गया, मगर हर वर्ष बाढ़ ने सारी तैयारियों की पोल खोलकर रख दी। माना कि प्रकृति के आगे किसी की नहीं चलती, मगर हमें अपनी जिम्मेदारी निभाना तो सीखना ही होगा। अन्यथा हर साल बाढ़ की विभीषिका हमें चिढ़ाती रहेगी।

विचार

विवाह की उम्र में बदलाव उचित

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लड़कियों के लिए शादी की न्यूनतम आयु में बदलाव के संकेत दिए हैं। केंद्र सरकार का यह फैसला बाल विवाह रोकने के संदर्भ में सहायक साबित हो सकता है। अतः सरकार इसका फैसला जल्द करे।

केंद्र सरकार शादी के लिए लड़की की न्यूनतम उम्र सीमा में बदलाव पर विचार कर रही है। माना जा रहा है कि सरकार की इस कवायद के पीछ सुप्रीम कोर्ट का एक फैसला हो सकता है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट भाषण में कहा था कि महिला के मां बनने की सही उम्र के बारे में सलाह देने के लिए एक टास्क फोर्स बनाई जाएगी। अभी भारत में लड़की की शादी के लिए न्यूनतम उम्र 18 साल और लड़के के लिए 21 साल तय की गई है। सुप्रीम कोर्ट ने अक्टूबर 2017 में एक फैसले में कहा था कि वैवाहिक बलात्कार से लड़की को बचाने के लिए बाल विवाह पूरी तरह से अवैध माना जाना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने विवाह के लिए न्यूनतम उम्र के बारे में फैसला लेने का काम सरकार पर छोड़ दिया था। अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लड़कियों के लिए शादी की न्यूनतम आयु में बदलाव के संकेत दिए हैं।

माना जा रहा है कि अब लड़कियों की शादी की न्यूनतम उम्र 18 से बढ़ाकर 21 की जा सकती है। इससे लड़कियों के जीवन में कई बदलाव आएंगे। लेकिन, बड़ा सवाल है कि आखिर सरकार बेटियों के विवाह की न्यूनतम उम्र क्यों बदलना चाहती है? लड़कियों की न्यूनतम उम्र सीमा में बदलाव करने के लिए पीछे उद्देश्य मातृ मृत्युदर में कमी लाना है। शादी के लिए लड़की और लड़के की न्यूनतम उम्र को एक समान होना चाहिए। अगर मां बनने की कानूनी उम्र 21 साल तय कर दी जाती है तो महिला की बच्चे पैदा करने की क्षमता वाले सालों की संख्या अपने आप घट जाएगी। भारत में बीते पांच सालों में तीन करोड़ 76 लाख लड़कियों की शादियां हुईं। इनमें से दो करोड़ 55 लाख ग्रामीण क्षेत्र में और एक करोड़ 21 लाख शहरी क्षेत्र में हुईं। इनमें से एक करोड़ 37 लाख (1.06 करोड़ ग्रामीण और 31 लाख शहरी) लड़कियों ने 18-19 की उम्र में शादी की।

वहीं 75 लाख लड़कियों (49 लाख ग्रामीण और 26 लाख शहरी) ने 20-21 की उम्र में शादी की। ग्रामीण महिलाओं की बात करें तो पांच सालों में 61 फीसदी ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली लड़कियों ने 18-21 की उम्र के बीच शादी की। लड़कियों की शादी की उम्र यदि 21 वर्ष तय की जाती है तो हम बाल विवाह पर काफी हद तक अंकुश लगाने में सफल हो सकते हैं। अभी 18 वर्ष है तो 15 से 17 वर्ष की उम्र की लड़कियों का विवाह प्रशासन की आंख में धूल झोंककर आसानी से कर दिया जाता है। जब लड़की की उम्र 21 साल हो जाएगी, तो ऐसा कर पाना संभव नहीं होगा। फिर 18 साल किसी भी लड़की के लिए परिपक्व उम्र नहीं होती। अगर उसकी 18 साल में शादी हो गई और एक साल बाद वह मां बन गई तो उस पर दोहरी जिम्मेदारी आ जाती है। एक तो वह खुद अपनी जिम्मेदारी उठाने के काबिल नहीं होती, ऐसे में बच्चे की परवरिश कठिन हो जाती है। अतः सरकार को लड़कियों की उम्र 21 वर्ष निर्धारित करनी चाहिए। ऐसा करने से कई समस्याएं एक साथ हल हो सकती हैं।

सोशल मीडिया दे रहा पीड़ा

सोशल मीडिया और गैजेटों की लत के कारण युवाओं में शारीरिक और मानसिक व्याधियां तेजी से बढ़ रही हैं। इससे उनमें निराशा व कुंठा पनप रही हैं और एक नए प्रकार की सांस्कृतिक विसंगति को जन्म दे रही हैं। यह संस्कृति न केवल सामाजिक संबंधों में उनकी सहभागिता को कम करती है अपितु उन्हें भय एवं आक्रामकता का शिकार भी बनाती है। लॉकडाउन में इस समस्या ने और विकराल रूप धारण किया है।

ऑफकॉम के एक अध्ययन के अनुसार 16 से 24 वर्ष की आयु के 15 फीसद युवा अपने फोन का इस्तेमाल लोगों से बातचीत के लिए नहीं करना चाहते, बल्कि मौखिक बातचीत के स्थान पर वे संदेश भेजना अधिक पसंद करते हैं। आज की किशोर पीढ़ी एक ही कमरे में अपने आसपास बैठे लोगों से बात करने के बजाय संदेश ही भेजती है। दरअसल, हम एक शोर रहित और आवाज रहित विश्व का हिस्सा बन चुके हैं। सार्वजनिक स्थानों पर होते हुए भी एक निजी विश्व निर्मित हो जाता है, जैसे भीड़ में, ट्रेन में, सड़क पर कहीं भी चलते हुए या बैठ कर हम ईअरफोन के जरिए अपना प्रिय संगीत सुन सकते हैं जबकि एक-दो दशक पहले तक ट्रेन या बस में यात्रा करते समय लोग एक-दूसरे से बातचीत करके परिचय बढ़ाने में रुचि रखते थे, राजनीतिक व गैर-राजनीतिक विषयों पर चर्चा करते थे, खाना-पीना साझा करते थे, लेकिन अब यात्रा के दौरान ऐसा कोई शोर नहीं सुनाई देता, कोई अनुभव नहीं होता।

समाज से कटने की यह प्रवृत्ति पहले से बढ़ रही थी। अब इसमें लॉकडाउन ने और इजाफा कर दिया है। फिर सोशल डिस्टेंसिंग ने समाज से दूरी को बढ़ाया ही है। अब इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि सोशल मीडिया ने संचार और संवाद करने के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया है। एक समय था जब लोग देर तक लैंडलाइन फोन पर दोस्तों और परिवार से बातचीत करते थे, विशेष अवसरों जैसे सालगिरह, त्योहार, पदोन्नति, नया सामान खरीदने आदि पर फोन पर बधाई का तांता लग जाता था। पर अब हर अवसर पर केवल संदेश भेज कर काम चल जाता है। कितना अजीब है कि एक ही संदेश हम सबको भेज देते हैं? यह कैसे संभव है कि सबके लिए भावनाएं, हमारा प्यार या दुआएं एक जैसी हों?

और यह भी सच है कि आमने-सामने या फोन की आवाज पर जो बधाई मिलती है, उसमें अलग आनंद आता है क्योंकि उसमें हंसी-मजाक और बहुत सारी दुआएं भी शामिल होती हैं। सोशल मीडिया ने इन सब चीजों को सामाजिक जीवन से गायब कर दिया है। मनुष्य केवल खुद तक सीमित हो गया है, इसलिए शायद अब सेल्फी का जमाना है, समूह फोटो का नहीं। फिर चाहे होटल में खाना खाते समय या किसी मॉल में घूमते समय, या शादी पार्टी के लिए तैयार होते समय सेल्फी लीजिए और तुरंत फेसबुक अथवा सोशल मीडिया पर अपलोड कर दीजिए, ताकि आपकी फोटो पर अधिक से अधिक कमेंट और लाइक मिल सकें। यदि आप यह सब नहीं करते तो आज के युग में आप सामाजिक प्राणी नहीं हैं, आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा तुलनात्मक रूप से कम हो सकती है। सामाजिक प्राणी और विकसित मस्तिष्क का स्वामी होने के नाते मनुष्य के लिए भाषा को संपर्क एवं संवाद स्थापित करने का सबसे प्रचलित और प्रभावी माध्यम माना जाता है। भाषा विज्ञानी सॉसर के अनुसार भाषा सामाजिक उत्पाद व वैयक्तिक व्यवहार दोनों है। अब सोशल मीडिया का उपयोग बढ़ने के बाद लोगों में संवाद या तो कम हो गया है या संदेशों में बदल गया है। जैसे-जैसे संवाद खत्म हो रहा है, वैसे-वैसे संस्कृति खत्म हो रही है, क्योंकि संस्कृति का पतन संवादहीनता से होता है।

संस्कृति के भीतर संवेदनाएं, भावनाएं, अनौपचारिकता और अपनत्व की भावना होती है। संदेश-संस्कृति से जन साहित्य खत्म हो रहा है, इससे संस्कृति मर रही है। चूंकि, संस्कृति जीवंत अनुभव होती है। यह टेक्नोलॉजी निर्देशित सभ्यता आने वाले दौर में संस्कृति की हत्या का औजार बनेगी। मौखिक संचार करने की शैली से व्यक्ति में भाषा विशेषज्ञता उत्पन्न होती है और उसमें अनुवाद करने की भी समझ विकसित होती है। संदेशों के माध्यम से नीरसता उत्पन्न हो रही है क्योंकि एक ही संदेश सबको भेज दिया जाता है, यहां तक कि अधिकांशतः बिना पढ़े अब संदेश दूसरों के आगे फॉरवर्ड कर दिए जाते हैं, बिना जांच किए कि वे सही हैं या गलत। ऐसा नहीं है कि सोशल मीडिया ने सकारात्मक पक्षों को उत्पन्न नहीं किया। आज ऐसे बहुत से लोग हैं जो बोलना चाहते थे, पर उन्हें कोई मंच उपलब्ध नहीं था। आज सोशल मीडिया ने उन्हें वह मंच दिया है जहां वे अपनी बात रख सकते हैं, अपनी प्रतिभा दिखा सकते हैं और लोग ऐसा कर भी रहे हैं। परंतु यह भी सच है कि कोई भी टेक्नोलॉजी बुरी नहीं होती। उसका सदुपयोग या फिर दुरुपयोग उसे अच्छा या बुरा साबित करता है। सोशल मीडिया ने मौन की संस्कृति, आक्रामकता की संस्कृति और विरोध की संस्कृति को तीव्र किया है।

ये तीनों एक सीमा तक तो लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए ठीक हैं, लेकिन इनसे लोकतंत्र के लिए खतरा भी उत्पन्न हुआ है। राजनीतिक उद्देश्यों के लिए जब व्यक्ति सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं, मीडिया कितना सही है कितना गलत, कौन-सी खबर सच है और कौन-सी झूठ, पुरानी सूचनाओं को कितने गलत तरीके से पेश किया जा रहा है, यह सब क्यों किया जा रहा है, जानना ज्यादा आवश्यक है। मीडिया खासतौर पर सोशल मीडिया जिस प्रकार की भूमिका निभा रहा है, वह संदेह के घेरे में है। देश की युवा पीढ़ी इस वक्त एक ऐसे संक्रमणकाल से गुजर रही है जो अनेक प्रकार की सामाजिक चिंताओं को उत्पन्न करता है। सोशल मीडिया के प्रति युवाओं के एक बहुत बड़े हिस्से का आकर्षण इसके आदी होने के स्तर तक जा पहुंचा है। वह सामाजिक जीवन के एक बहुत बड़े भाग को प्रभावित एवं निर्धारित करने लगा है। देर रात तक चैटिंग करना या फिर ऑनलाइन गेम खेलना, सेल्फी लेने का शौक, वॉट्सएप का अनवरत प्रयोग करना और अध्ययन सामग्री के लिए विभिन्न साइटों की खोज में संलग्न रहना, वे पक्ष हैं जो यह दर्शाते हैं कि सोशल मीडिया ने सामाजिक जीवन को व्याधिकीय स्तर तक प्रभावित किया है। इसीलिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ऑनलाइन गेम खेलने की लत को मानसिक रोग की श्रेणी में शामिल किया है।

सोशल मीडिया व गैजेटों की लत के कारण युवाओं में शारीरिक, मानसिक व्याधियां तेजी से बढ़ रही हैं। इससे निराशा व कुंठा पनप रही हैं और एक नई सांस्कृतिक विसंगति को जन्म दे रही हैं। यह संस्कृति न सिर्फ सामाजिक संबंधों में उनकी सहभागिता को कम करती है अपितु उन्हें भय एवं आक्रामकता का शिकार बनाती है। कहीं न कहीं आत्महत्या की प्रवृत्ति के उत्पन्न होने में सांस्कृतिक विसंगति की भी भूमिका है। सोशल मीडिया का एक विशिष्ट वर्ग बन गया है। इसमें से किसान, श्रमिक, आदिवासी, महिलाओं से जुड़े मुद्दे गायब हैं। ऐसे में यह सवाल तो उठता ही है कि सोशल मीडिया हाशिये के लोगों की आवाज क्यों नहीं बन पाया? इस पर सोचा जाना जरूरी है। एक तबका धीरे-धीरे ऐसा भी उभर रहा है जो सोशल मीडिया से ऊब गया है। वह अब किसी भी विषय पर कोई भी प्रतिक्रिया नहीं करता। लोग अब विरोध के स्वर सुनना नहीं चाहते, उन्हें सिर्फ प्रशंसा और समर्थन की आदत हो गई है। इसलिए जब मीडिया मनुष्य को नियंत्रित करने लगे तो समाज में खतरे दिखाई देने लगते हैं। दासता किसी की भी हो, मनुष्य की या टेक्नोलॉजी की, विकास के मार्ग में बाधा ही पैदा करती है।

ट्विटर

लड़कियों की विवाह की उम्र में बदलाव पर रिपोर्ट का इंतजार है। टास्क फोर्स की रिपोर्ट आते ही फैसला कर लिया जाएगा। केंद्र सरकार का रुख स्पष्ट है।

निर्मला सीतारमण, रक्षा मंत्री

लड़कियों की विवाह की उम्र तय किए जाने से बाल विवाह पर रोक की कवायद को गति मिलेगी। अभी ग्रामीण क्षेत्रों में कई जगह बाल विवाह देखने को मिलते हैं।

श्वेता, वरिष्ठ पत्रकार

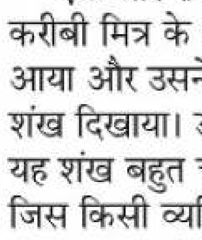

सत्यार्थ

विश्वास नहीं, तर्क

एक बार राममोहन राय के एक करीबी मित्र के पास एक व्यक्ति आया और उसने उन्हें एक विचित्र शंख दिखाया। उसने बताया कि यह शंख बहुत चमत्कारी है। यह जिस किसी व्यक्ति के पास रहेगा, वह अतुल्य संपत्ति का मालिक बन जाएगा। इसलिए वह कोई अच्छा ग्राहक खोज रहा है, ताकि इस शंख को बेचा जा सके। उस व्यक्ति ने शंख के विषय में और भी कई आश्यर्चजनक बातें बताईं। यह बातें सुनकर राममोहन राय के मित्र उस शंख को खरीदने के लिए व्याकुल हो गए। उस शंख की कीमत पांच सौ रुपए थी। शंख खरीदने से पहले यूं ही उनके मन में विचार आया कि क्यों न इस चमत्कारी शंख के बारे में वह अपने मित्र राममोहन राय से भी विचार-विमर्श कर लें। जब उन्होंने राममोहन राय को शंख के विषय में बताया तो वे चुपचाप शंख का महिमा गान सुनते रहे और फिर बोले- उस व्यक्ति को बुलाओ। मैं उससे मिलना चाहता हूं और शंख देखना चाहता हूं। मित्र ने शंख बेचने वाले को बुलाया, तो वह फिर से शंख की विशेषता बताने लगा। राममोहन राय ने उससे प्रश्न किया-यदि आपके पास इतना चमत्कारी शंख है, तो इसे आप अपने पास क्यों नहीं रखते? इतने समय से यह शंख आपके पास है, आप तो संपन्न नजर नहीं आते? मात्र पांच सौ रुपए में आप इस शंख को बेचने के लिए इतने व्याकुल क्यों हैं? राममोहन राय के प्रश्न सुनकर वह व्यक्ति घबरा गया। उससे कोई उत्तर देते नहीं बन रहा था। वह वहां से चुपचाप खिसक गया। इस प्रकार राममोहन राय ने अपने मित्र को एक धोखेबाज के चंगुल में फंसने से तो बचाया ही उसके पांच सौ रुपए भी बेकार नहीं जाने दिए। इस तरह उन्होंने अपना मित्रता धर्म निभाया।

सूरत में इन दिनों भारी बारिश हो रही है। यहां सड़कें तालाब बन गई है, वहीं निचली बस्तियां जलमग्न हैं। इस कारण लोगों को घुटनों और कहीं-कहीं कमर तक पानी से होकर गुजरना पड़ता है। इससे महिलाओं और बच्चों को काफी परेशानी होती है।

एमिन एर्दोआन से मुलाकात कर निशाने पर आए आमिर खान

तुर्की के राष्ट्रपति की पत्नी से मुलाकात लोगों को नहीं आई पसंद

नई दिल्ली ■ एजेंसी

बॉलीवुड सुपरस्टार आमिर खान इन दिनों फिल्म लाल सिंह चड्ढा की शूटिंग के लिए तुर्की में हैं। इस दौरान उन्होंने तुर्की के राष्ट्रपति की पत्नी एमिन एर्दोआन से मुलाकात की है। तुर्की की फर्स्ट लेडी की ओर से ट्विटर पर इस मुलाकात की तस्वीरें शेयर करने के बाद आमिर निशाने पर आ गए हैं। कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान की भाषा बोलने वाली तुर्की की सरकार के साथ आमिर का यह मेल-जोल बहुत से लोगों को पसंद नहीं आया।

तुर्की के राष्ट्रपति की वेबसाइट के अनुसार प्रथम महिला ने शनिवार को इस्तांबुल स्थित राष्ट्रपति आवास में अभिनेता से शनिवार को मुलाकात की। शनिवार को भारत का 74वां स्वतंत्रता दिवस भी था। प्रथम महिला ने इस मुलाकात के बारे में ट्वीट भी किया। उन्होंने लिखा कि भारतीय अभिनेता आमिर खान से इस्तांबुल में मिलकर मुझे बेहद खुशी हुई। मुझे जानकर खुशी हुई की वह अपनी फिल्म लाल सिंह चड्ढा की शूटिंग तुर्की में पूरा करने के लिए आए हैं। मैं इसको लेकर आशान्वित हूं।

आमिर ने दी सामाजिक प्रतिबद्धताओं से जुड़े कामों की जानकारी

वेबसाइट पर प्रकाशित बयान के अनुसार खान ने एर्दोआन को सामाजिक प्रतिबद्धताओं से जुड़े अपने कामों के बारे में बताया और प्रथम महिला ने उन्हें अपनी फिल्मों के माध्यम से सामाजिक मुद्दों को उठाने की बधाई दी। विज्ञप्ति में कहा गया है, कि मिस्टर खान ने बताया कि वह अपनी फिल्म लाल सिंह चड्ढा की शूटिंग तुर्की में पूरा करेंगे, क्योंकि कोरोना संक्रमण की वजह से इसकी शूटिंग भारत में पूरी नहीं हो पाई। अभिनेता ने प्रथम महिला को फिल्म सेट पर आने का निमंत्रण भी दिया। यह फिल्म अब क्रिसमस के मौके पर 2021 में रिलीज होगी। फिल्म में करीना कपूर भी हैं। यह फिल्म हॉलीवुड अभिनेता टॉम हैंक्स की 1994 में आई फिल्म फॉरेस्ट गंप की आधिकारिक रीमेक है। पहले यह फिल्म इसी साल 25 दिसंबर को रिलीज होने वाली थी।

ट्विटर पर हो रहे ट्रोल: ट्विटर पर आमिर और तुर्की की फर्स्ट लेडी की तस्वीरों को शेयर करते हुए लोग इस मुलाकात पर सवाल उठा रहे हैं।

क्यों हो रहे हैं ट्रोल

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने का तुर्की ने विरोध किया था। हाल ही में हागिया सोफिया म्यूजियम को मस्जिद बनाने के फैसले से तुर्की ने दुनिया का ध्यान खींचा था। एमीन अर्दोआन जिनसे आमिर ने मुलाकात की, वो हमेशा हिजाब पहनती हैं। तुर्की में हिजाब प्रतिबंधित था। हिजाब के साथ लड़कियां यूनिवर्सिटी नहीं जा सकती थीं। अर्दोआन की पत्नी हिजाब से ही किसी सार्वजनिक कार्यक्रम में नहीं जाती थीं। कुछ लोग आमिर को इस सोच से भी जोड़कर ट्रोल कर रहे हैं।

न्यूज

दिलावर की याचिका पर सुनवाई एक हफ्ते टली

नई दिल्ली, (एजेंसी)। उच्चतम न्यायालय ने बसपा विधायकों के कांग्रेस में विलय को मंजूरी देने के अध्यक्ष सी पी जोशी के फैसले पर रोक लगाने संबंधी मामले की सुनवाई एक हफ्ते के लिए स्थगित कर दी। न्यायमूर्ति अरुण मिश्रा की अध्यक्षता वाली तीन-सदस्यीय खंडपीठ ने भाजपा विधायक मदन दिलावर की विशेष अनुमति याचिका (एसएलपी) की सुनवाई उस वक्त एक हफ्ते टाल दी जब उसे बताया गया कि राजस्थान हाईकोर्ट ने अपना आदेश नहीं सुनाया है। वरिष्ठ अधिवक्ता सत्यपाल जैन ने खंडपीठ को बताया कि हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश केकोरोना संक्रमित होने की सूचना के बाद वहां शुक्रवार को सुनवाई नहीं हुई।

उत्तर प्रदेश विधानमंडल का मानसून सत्र 20 अगस्त से

लखनऊ, (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश विधानमंडल का मानसून सत्र 20 अगस्त से शुरू होगा, लेकिन कोरोना महामारी को देखते हुए इसे संक्षिप्त किया गया है। विधानसभा सचिवालय के सूत्रों के अनुसर सत्र को तीन दिन का ही रखा गया है। इस सत्र की खास बात यह कि इसमें सदस्यों के कोरोना टेस्ट की सुविधा रहेगी। सत्र में भाग लेने वाले सदस्यों के लिये गर्म पानी और काढ़े का इंतजाम रहेगा। कोविड 19 के पमरे प्रोटोकॉल का पालन किया जायेगा तथा पूर्व विधायकों और सांसदों के आने पर रोक रहेगी।

प्रोजेक्ट डॉल्फिन की लॉन्चिंग 15 दिन के भीतर: जावडेकर

नई दिल्ली, (एजेंसी)। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री प्रकाश जावडेकर ने सोमवार को कहा कि डॉल्फिनों के संरक्षण के लिए प्रोजेक्ट डॉल्फिन की रूपरेखा तैयार कर 15 दिन के भीतर इसकी औपचारिक लॉन्चिंग की जाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से राष्ट्र के नाम संबोधन में प्रोजेक्ट डॉल्फिन की घोषणा की थी। इसके तहत नदियों और समुद्रों में रहने वाली डॉल्फिन का संरक्षण कर उनकी संख्या बढ़ाई जाएगी। जहां डॉल्फिन पाई जाती है, वहां मछुआरों और नदियों तथा समुद्रों पर निर्भर स्थानीय लोगों की मदद से परियोजना को अंजाम दिया जाएगा। वन एवं पर्यावरण के संबंध में राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के सचिवों तथा अधिकारियों के साथ वर्चुअल बैठक में जावडेकर ने कहा कि हमारी नदियों में तीन हजार डॉल्फिन हैं।

बाहुबली विधायक मिश्रा भेजे गए सेंट्रल नैनी जेल

प्रयागराज, (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में भदोही जिले के ज्ञानपुर विधानसभा क्षेत्र के बाहुबली विधायक विजय मिश्रा को प्रयागराज में नैनी सेन्ट्रल भेज दिया गया है। जेल के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक पी एन पाण्डेय ने सोमवार को बताया कि रविवार देर रात विजय मिश्रा को भदोही से कड़ी सुरक्षा के बीच सुरक्षा कारणों से नैनी सेंट्रल जेला लाया गया। उन्हे जेल परिसर में बनाए गए क्वारंटाइन सेंटर में रखा गया है। यहां उनका कोरोना टेस्ट कराया गया। ज्ञानपुर विधानसभा क्षेत्र से निषाद पार्टी के बाहुबली विधायक विजय मिश्रा को मध्य प्रदेश के मालवा से उस समय गिरफ्तार किया गया था जब वह उज्जैन में बाबा महाकाल के दर्शन कर प्रयागराज लौट रहे थे।

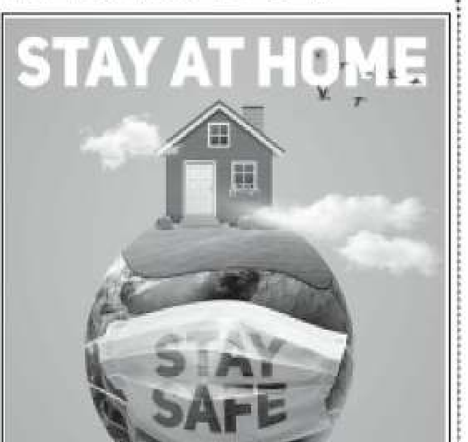

सतर्क रहे! सुरक्षित रहे!
कोरोना वायरस से
सावधान रहे
क्योंकि सावधानी
ही बचाव हैं।
कोरोना को धोना हैं।

योगी मॉडल से बेंगलुरु हिंसा के दोषियों को सबक सिखाएंगे येदियुरप्पा

बेंगलुरु ■ एजेंसी

कर्नाटक सरकार ने यूपी की योगी आदित्यनाथ सरकार की राह पर चलते हुए हिंसा के दौरान सरकारी व निजी संपत्तियों को नुकसान पहुंचाने वालों से वसूली का ऐलान किया है। सीएम बीएस येदियुरप्पा ने सोमवार को एक के बाद एक कई ट्वीट के जरिए यह घोषणा करते हुए कहा कि केजी हल्ली और डीजी हल्ली (बेंगलुरु) में हिंसा से सरकारी व निजी संपत्तियों को हुए नुकसान का आकलन किया जाएगा और दोषियों से कीमत वसूल की जाएगी। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के मुताबिक क्लेम कमिश्नर की नियुक्ति के लिए राज्य सरकार हाईकोर्ट जाएगी।

सरकारी-निजी संपत्ति को हुए नुकसान की वसूली का ऐलान

उत्तर प्रदेश रिकवरी फॉर डैमेज टू पब्लिक एंड प्राइवेट अध्यादेश-2020 को दी थी मंजूरी

इससे पहले संशोधित नागरिकता कानून के विरोध में उत्तर प्रदेश में हिंसक प्रदर्शन करने वालों से योगी आदित्यनाथ सरकार ने वसूली का आदेश दिया था। उत्तर प्रदेश सरकार हिंसा अथवा दंगे के दौरान सार्वजनिक संपत्ति को आगजनी या तोड़फोड़ के जरिए नुकसान पहुंचाने वालों के खिलाफ नया कानून भी बनाएगी। सरकार ने 13 मार्च को उत्तर प्रदेश रिकवरी फॉर डैमेज टू पब्लिक एंड प्राइवेट अध्यादेश-2020 को मंजूरी दी थी। गौरतलब है कि पिछले दिनों एक फेसबुक पोस्ट को लेकर बेंगलुरु में हिंसक भीड़ ने जमकर उत्पात मचाया। दो थाना क्षेत्रों में उन्होंने कई गाड़ियों और मकानों को फूंक दिया। एक कांग्रेस विधायक के घर भी लूटपाट और आगजनी की गई।

तनावपूर्ण संबंधों के बीच भारत-नेपाल के बीच उच्चस्तरीय वार्ता

रामायण सर्किट समेत अन्य मुद्दों पर हुई अहम चर्चा

नई दिल्ली ■ एजेंसी

भारत और नेपाल के शीर्ष राजनयिकों ने सोमवार को डिजिटल बैठक कर भारत की मदद से नेपाल में चल रहीं विकास संबंधी परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की और इनके कार्यान्वयन में तेजी लाने का फैसला किया। यह बैठक नेपाल के प्रधानमंत्री के पी शर्मा ओली द्वारा पीएम नरेंद्र मोदी को फोन कर भारत के 74वें गणतंत्र दिवस पर बधाई देने के बाद हुई है।

मंत्रालय ने बताया कि इसके अलावा पंचेश्वर बहुउद्देशीय परियोजना, भूकंप के बाद पुनर्निर्माण, सिंचाई, बिजली एवं ट्रांसमिशन लाइन, नेपाल पुलिस अकादमी के निर्माण, एकीकृत जांच चौकी, रामायण सर्किट, एचआईसीडीपी, महाकाली नदी पर पुल, कृषि और सांस्कृतिक विरासत जैसे कई मुद्दों पर चर्चा की गई। 2016 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेपाल दौरे के बाद भारत-नेपाल पर्यवेक्षण तंत्र की स्थापना की गई थी।

सड़क उदघाटन के बाद पैदा हो गया था तनाव

भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने आठ मई को उत्तराखंड के धारचुला को लिपुलेख दर्रे से जोड़ने वाली सामरिक रूप से महत्वपूर्ण 80 किमी लंबी सड़क का उद्घाटन किया था, जिसके बाद दोनों देशों के बीच तनाव पैदा हो गया था। नेपाल ने विरोध करते हुए दावा किया कि यह सड़क उसके क्षेत्र से होकर गुजरती है। कुछ समय बाद नेपाल ने नया राजनीतिक नक्शा जारी किया, जिसमें लिपुलेख, कालापानी और लिम्पियाधुरा को उसके क्षेत्र में दिखाया गया है।

नेपाली विदेश सचिव बैरागी और भारतीय राजदूत क्वात्रा में वार्ता

नेपाल द्वारा मई में नया राजनीतिक मानचित्र जारी करने के बाद भारत के साथ द्विपक्षीय संबंधों में आई तल्खी के बाद दोनों देशों के बीच यह पहली उच्च-स्तरीय वार्ता है। नेपाल के विदेश मंत्रालय के अनुसार नेपाली विदेश सचिव शंकर दास बैरागी और नेपाल में भारतीय राजदूत विजय मोहन क्वात्रा ने पर्यवेक्षण तंत्र की इस आठवीं बैठक में अपने-अपने देश के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। सूत्रों ने कहा कि कोरोना महामारी के चलते डिजिटल माध्यम से हुई इस बैठक में द्विपक्षीय आर्थिक और विकास संबंधी परियोजनाओं की समीक्षा की गई। इस संबंध में पिछली बैठक आठ जुलाई 2019 को हुई थी, जो ऐसी सातवीं बैठक थी।

काम तेज करने पर जताई सहमति

भारतीय दूतावास की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार दोनों पक्षों ने विभिन्न परियोजनाओं पर चर्चा की और उनके कार्यान्वयन का काम तेज करने पर सहमति जताई। दोनों पक्षों ने बीते एक साल में विकास संबंधी परियोजनाओं में हुई प्रगति की समीक्षा की, जिसमें गोरखा और नुवाकोट जिलों में भूकंप से तबाह हुए 46,301 घरों के पुनर्निमाण और सीमा पार पेट्रोलियम उत्पाद पाइपलाइन मोतिहारी-अमलेखगंज का संचालन शुरू करने, बिराटनगर में एकीकृत जांच चौकी और सामुदायिक विकास परियोजनाएं शामिल हैं।

मलेशिया में मिली कोरोना की नई किस्म, जो 10 गुना ज्यादा संक्रामक

क्वालालंपुर ■ एजेंसी

मलेशिया में जांचकर्ताओं को कोरोना की ऐसी किस्म का पता चला है, जो सामान्य से 10 गुना ज्यादा संक्रामक है। कोरोना के इस म्यूटेशन को दुनिया में डी 614 जी के नाम से जाना जाता है। बताया जा रहा है कि ऐसे मामलों की शुरुआत एक मलेशियाई रेस्टोरेंट मालिक के हाल में ही भारत से लौटने के बाद 14 दिन के आवश्यक क्वारंटाइन अवधि को तोड़ने से शुरू हुआ है।

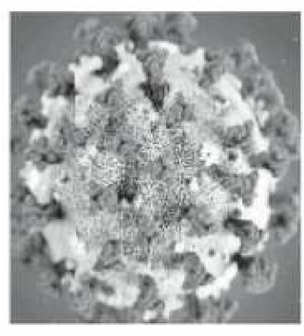

इस म्यूटेशन को डी 614 जी के नाम से जाना जाता है।

संक्रमण के तेजी से फैलने की संभावना: आरोपी व्यक्ति को क्वारंटाइन के नियम तोड़ने के लिए 5 महीने की सजा और जुर्माना लगाया गया है। ऐसा ही मामला फिलीपींस से लौटने वाले एक समूह में भी देखने को मिला है। जहां 45 लोगों में से 3 के अंदर कोरोना का यह टाइप पाया गया है। अमेरिका के शीर्ष स्वास्थ्य सलाहकार डॉ. फौसी ने कहा है कि इस म्यूटेशन से कोरोना वायरस का प्रसार और तेजी से हो सकता है।

वैक्सीन के विकास की स्पीड होगी धीमी: मलेशियाई स्वास्थ्य विभाग के डॉयरेक्टर जनरल नूर हिशाम अब्दुल्ला ने कहा कि कोरोना वायरस के नए म्यूटेशन के गंभीर परिणाम देखने को मिल सकता है। इससे अभी तक वैक्सीन बनाने और म्यूटेशन को रोकने के लिए विकसित की गई तकनीकी भी फेल हो सकती है।

365 केस सुलझाने वाले खोजी कुत्ते रॉकी की मौत

बीड में पुलिसवालों की आंखें हुई नम

मुंबई ■ एजेंसी

महाराष्ट्र पुलिस का वह खोजी कुत्ता अब इस दुनिया में नहीं रहा, जिसने 365 केसों को सुलझाने में अहम भूमिका निभाई थी। महाराष्ट्र में रविवार को बीड पुलिस ने अपने कैनाइन (कुत्ता) सहयोगी रॉकी को विदाई दी, जिसने रविवार को अंतिम सांस ली थी। यह खोजी कुत्ता रॉकी पुलिस की आंख, नाक और कान सब था, क्योंकि इसने 365 मामलों को सुलझाने में बीड पुलिस की मदद की थी।

पूरे सम्मान के साथ दी गई अंतिम विदाई

बीड पुलिस ने रॉकी को पूरे सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी। रॉकी को पुलिसवालों ने नम आखों से और पूरे सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी। बताया जा रहा है कि रॉकी काफी समय से बीमार था। बीड पुलिस ने रॉकी की तस्वीर ट्वीट की और लिखा कि आज शाम 4 बजे रॉकी, हमारे कैनाइन साथी और सहयोगी का लंबी बीमारी के कारण निधन हो गया। उसने 365 मामलों को हल करने में मदद की थी। बीड पुलिस परिवार को उनके निधन से गहरा दुख हुआ है। बहादुर रॉकी (कुत्ते) को श्रद्धांजलि दी गई। बता दें कि कुछ कुत्तों को विशेष रूप से पुलिस और अन्य कानून-प्रवर्तन कर्मियों को विभिन्न सेवाओं जैसे ड्रग्स और विस्फोटक की खोज करने, सबूत खोजने और लोगों का पता लगाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

पीएम मोदी को उम्मीदों भरी चिट्ठी लिखकर दुनिया छोड़ गई आंचल, मिला सुसाइड नोट

संभल, (एजेंसी)। यूपी के संभल जिले में बबराला में रहने वाली 15 साल की छात्रा आंचल गोस्वामी ने आत्महत्या कर ली। आत्महत्या से पहले उसके द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम लिखा गया 19 पेज का सुसाइड नोट मिला है। इसमें आंचल ने घर परिवार नहीं, देश और समाज के हालात पर चिंता जाहिर की। बढ़ते प्रदूषण और बढ़ती जनसंख्या जैसे मुद्दे उठाकर प्रधानमंत्री से समाधान की उम्मीद जताई।

परिजन आंचल का अखिरी खत प्रधानमंत्री तक हर हाल में पहुंचाने की बात कह रहे हैं। आंचल ने सुसाइड नोट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ करते हुए लिखा है कि देश में कई पीएम हुए पर प्रधानमंत्री जी आप जैसा कोई नहीं। मेरे हृदय में आपके लिए अत्यधिक सम्मान है, काश मैं अपनी उम्र आपको दे पाती। आपमें संस्कार कूट-कूटकर निवास करते हैं। यह देश वर्षों से अंधेरे में था और आप पहले सूर्य बनकर उभरे हैं। प्रधानमंत्री जी मैं आपसे पर्सनल मीटिंग करना चाहती थी, परंतु यह असंभव है, क्योंकि आप खुद को ही समय नहीं दे पाते हो।

... इसलिए मुझे नहीं पसंद यह दुनिया

मेरा नाम आंचल गोस्वामी है, मुझे यह दुनिया पसंद नहीं है, क्योंकि यहां लोग झगड़े करते हैं। मां-बाप को वृद्धाश्रम भेज देते हैं उनके साथ गाली-गलौज मारपीट करते हैं। लोग पेड़-पौधे काटते हैं। वह जानवरों पर अत्याचार करते हैं। जो लोग मांसाहार का सेवन करते हैं ऐसे लोग बुरे लगते हैं। नफरत है ऐसे लोगों से जो अपने राष्ट्रगान पर खड़े होने से कतराते हैं। ऐसे लोगों को देश से निकाल देना जरूरी है।

आत्महत्या के लिए नहीं कोई जिम्मेदार: अंत में आंचल गोस्वामी ने लिखा..मेरा प्रधानमंत्री आपको नमन है। मैं आत्महत्या अपनी इच्छा से कर रही हूं। इसका कोई भी जिम्मेदार नहीं है, न कोई घर वाला न कोई बाहर वाला। मम्मी से माफी मांगना चाहती हूं। मम्मी पता नहीं मुझे क्या हो गया है।

संजय झा का दावा- नेतृत्व बदलने के लिए 100 कांग्रेसी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कांग्रेस पार्टी ने हाल ही में इस बात की घोषणा की थी कि पूर्णकालिक अध्यक्ष के चुनाव तक सोनिया गांधी पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष बनी रहेंगी। इस बीच कुछ दिनों पहले कांग्रेस से निलंबित किए संजय झा ने ट्वीट कर एक सनसनीखेज दावा किया है। उन्होंने कहा कि लगभग 100 कांग्रेस नेता (सांसद सहित) पार्टी के आंतरिक मामलों से व्यथित हैं।संजय झा ने अपने ट्वीट में दावा किया कि इन नेताओं ने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी को एक पत्र लिखा है, जिसमें राजनीतिक नेतृत्व बदलने की मांग की गई है। साथ ही नेताओं ने कांग्रेस कार्यसमिति में पारदर्शी चुनावों की भी मांग उनके समक्ष रखी है। कांग्रेस विरोधी पार्टी गतिविधियों के लिए पार्टी से निलंबित किए गए संजय झा ने हाल ही में कहा था कि वह पार्टी की विचारधारा के प्रति वफादार हैं, लेकिन उनकी वफादारी किसी व्यक्ति या परिवार के प्रति नहीं है।

क्रिकेट और राजनीति का सितारा पंचतत्व में विलीन

अमरोहा ■ एजेंसी

पूर्व भारतीय सलामी बल्लेबाज और उप्र के कबीना मंत्री चेतन चौहान का अंतिम संस्कार यहां मूसलाधार बारिश के बीच गंगा तट पर स्थित बृज घाट पर पूरे राजकीय सम्मान के साथ कर दिया गया।

उनका रविवार को गुरूग्राम के मेदांता अस्पताल में निधन हो गया था। आस्ट्रेलिया के मेलबोर्न से आये उनके इकलौते पुत्र विनायक ने पिता को शाम चार बजकर 12 मिनट पर मुखाग्नि दी। इस दौरान उनकी पत्नी संगीता और कुछ रिश्तेदारों के अलावा अमरोहा संसदीय क्षेत्र के विधायक, अधिकारी और उनके युवा प्रशंसक मौजूद थे। अंतिम संस्कार के दौरान कोविड प्रोटोकाल का अक्षरशः पालन किया गया। अमरोहा से 25 किमी दूर दिल्ली रोड पर गढ़ गंगा स्थित घाट पर क्रिकेट सितारे का पार्थिव शरीर दोपहर दो बजकर 26 मिनट पर लाया गया। इस दौरान पहले से मौजूद उनके प्रशंसकों ने दूर से ही अपने चहेते नेता और खिलाड़ी को अश्रुपूरित नेत्रों से अंतिम विदाई दी। इस दौरान घाट पर पूर्णतः शांति छायी रही हालांकि मुखाग्नि के समय चेतन चौहान अमर रहें के गगनभेदी नारे प्रशंसकों ने लगाए।

संसद के एनेक्सी भवन में लगी आग

नई दिल्ली, (एजेंसी)। मध्य दिल्ली में संसद के एनेक्सी भवन में सोमवार सुबह आग लग गई, जिसके बाद सात दमकल गाड़ियों को मौके पर भेजा गया। एक अधिकारी ने इसकी जानकारी दी । दिल्ली की दमकल सेवा के अधिकारियों ने बताया कि इमारत की छठी मंजिल पर कमरा संख्या 633 में आग लगी थी। उन्होंने बताया कि इस घटना में कोई घायल नहीं हुआ और आग से क्षति भी कमरे तक ही सीमित रही। उन्होंने बताया कि सुबह साढ़े सात बजे आग लगने की जानकारी मिली। उन्होंने बताया कि ऐसी आशंका है कि शॉर्ट-सर्किट के कारण यह घटना हुई है ।

स्मृति शेष

मेवाती घराने से ताल्लुक रखते थे प्रसिद्ध शास्त्रीय पंडित जसराज

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी कहते थे उन्हें रसराज

लखनऊ ■ एजेंसी

संगीत साधना और पंडित जसराज दोनों एक दूसरे के पूरक थे। 28 जनवरी 1930 को हरियाणा के हिसार में जन्में जसराज की संगीत शिक्षा अपने घर पर हुई। जसराज के पिता पंडित मोतीराम भी मशहूर गायक थे और मेवाती घराने से ताल्लुक रखते थे। जसराज के रग में रग संगीत बसता था। भारतीय शास्त्रीय गायन को उन्होंने पूरी दुनिया में पहचान दिलाई थी। दिवंगत पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी प्यार से पंडित जसराज को रसराज कहते थे।

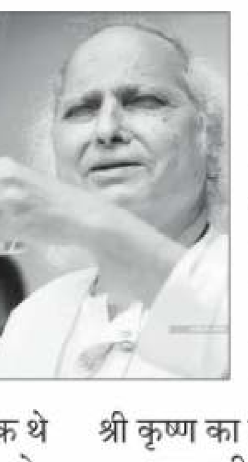

पंडित जसराज देश के एकलौते ऐसे शास्त्रीय संगीत गायक थे, जिन्होंने सातों महाद्वीपों में संगीत को एक शीर्ष स्थान दिलाया और वहां प्रस्तुति दी। उनके तमाम कार्यक्रमों में हिस्सा लेने वाले लोग कहते हैं, पंडित जी मंच पर होते तो कार्यक्रम में श्री कृष्ण का मधुराष्टकम जरूर गाया जाता।

भारत की संगीत परंपरा के वाहक पुरुष रहे पंडित जसराज का सोमवार को अमेरिका में निधन हो गया। उनके निधन से देश शोकाकुल है। खुद राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और देश के शीर्षतम लोगों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी है।

बेटी दुर्गा जसराज ने दी निधन की सूचना

पंडित जसराज के निधन के बाद उनकी बेटी दुर्गा जसराज ने उनकी कृष्ण भक्ति का जिक्र करते हुए ही उनके निधन की सूचना सभी को दी। दुर्गा जसराज ने अपने संदेश में कहा कि संगीत मार्तंड पंडित जसराज का अमेरिका के न्यू जर्सी में सुबह सवा पांच बजे कार्डियक अरेस्ट के चलते निधन हो गया। हम प्रार्थना करते हैं कि भगवान कृष्ण स्वर्ग में प्रेम से उनका स्वागत करें, जहां पंडित जी ऊं नमो भगवते वासुदेवाय सिर्फ अपने भगवान के लिए गाएंगे।

सातों महाद्वीपों में गाया मधुराष्टकम: पंडित जसराज के निधन के इसी समाचार के बाद तमाम लोगों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। श्रद्धांजलि देने वालों में पीएम नरेंद्र मोदी, राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद जैसी विभूतियां भी शामिल रहीं। संस्मरणों का जिक्र शुरू हुआ तो ये बात भी याद आई कि पंडित जसराज देश के एकलौते ऐसे शास्त्रीय संगीत गायक थे, जिन्होंने सातों महाद्वीपों में संगीत को एक शीर्ष स्थान दिलाया और वहां प्रस्तुति दी। उनके तमाम कार्यक्रमों में हिस्सा लेने वाले लोग कहते हैं, पंडित जी मंच पर होते तो कार्यक्रम में श्री कृष्ण का मधुराष्टकम जरूर गाया जाता। कोई न कोई भजन भी, जिससे उनके सामने बैठे लोग भाव विभोर हो उठते।

वो जो भी गाते, वहीं संगीत के शास्त्र सा हो जाता

भगवान कृष्ण के साधक कहे जाने वाले पंडित जसराज के निधन के आखिरी समाचार तक में भगवान कृष्ण का जिक्र हुआ। उनको जानने वाले तमाम लोग कहते हैं कि वह देवत्व में बड़ी आस्था रखते थे। स्पिक मैके की यूपी कन्वेनर मधुरानी शुक्ला उनके साथ के संस्मरण याद करते हुए कहती हैं कि वे संगीत के साधक पुरुष थे। वे मंच पर होते तो मन के भाव छोटे हो जाते और मस्तिष्क किसी अलग रूप में चला जाता। वो जो भी गाते थे वह संगीत के शास्त्र सा बन जाता था। उन्होंने भगवान राम, हनुमान और कृष्ण पर लिखे भजनों को सारी दुनिया के मंचों पर प्रसिद्ध किया था।

पूर्व, पश्चिम के उद्योगों को दक्षिण से जोड़ने को ढुलाई गलियारे बनाएगा रेलवे

नई दिल्ली, (एजेंसी)। रेलवे देश के पूर्वी और पश्चिमी हिस्सों के औद्योगिक क्षेत्रों को दक्षिण भारत से जोड़ने करीब 4,000 किमी के प्रतिबद्ध मालढुलाई गलियारों (डीएफसी) का निर्माण करेगा। इसमें देश के पूर्वी और पश्चिमी हिस्सों को दक्षिण भारत के साथ ओड़िशा और आंध्र प्रदेश के प्रमुख बंदरगाहों के जरिए जोड़ा जाएगा। इनमें....खड़गपुर (प. बंगाल) से विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश) को जोड़ने वाला 1,115 किमी का पूर्वी तटीय गलियारा, भुसावल-नागपुर-खड़गपुर-दानकुनी (कोलकाता के पास) मार्ग को जोड़ने वाला 1,673 किमी का पूर्व-पश्चिम गलियारा और 195 किमी का राजखर्सवान-कालीपहाड़ी-अंडल (प. बंगाल) को जोड़ने वाला गलियारा शामिल हैं। तीसरा 975 किमी का उत्तर दक्षिण उप गलियारा है। यह विजयवाड़ा-नागपुर-इटारसी (मध्य प्रदेश) मार्ग को जोड़ेगा।

जहरीली शराब पीने से मरे तरनतारन के एक रिक्शा चालक के चार अनाथ हुए बच्चों को जिम्मा उठाया सोनू सूद ने

चाहे परिजन संभालें लेकिन बच्चों के पैरों पर खड़े होने तक ख्याल रखेंगे–सोनू सूद

• जालंधर ब्रीज की विशेष रिपोर्ट

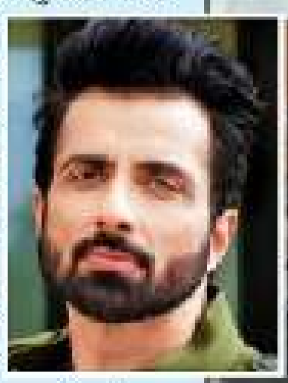

पिछले दिनों जहरीली शराब पीने से मरे तरनतारन के सुखदेव सिंह व गम में उसकी पत्नी की मौत के बाद अनाथ हो गए थे चार बच्चे कहते हैं कि अच्छाई कभी समाप्त नहीं होती, वह हमेशा बनी रहती है। कुछ ऐसी ही मिसाल मूल रूप से पंजाब निवासी एवं मुंबई की फिल्मी दुनिया में स्थापित अदाकार सोनू सूद और उनके परम मित्र करण गिलहोत्रा ने पेश की है। उनकी पहल कदमी पर जहां पिछले दिनों पंजाब में जहरीली शराब पीने से जान गंवाने वाले एक गरीब रिक्शा चालक और उसके गम में स्वर्गवासी उसकी पत्नी के बाद अनाथ हुए चार बच्चों को जहां अनाथालय में रहने को हरी झंडी मिली थी, वहीं दोनों मित्रों ने उनकी शिक्षा दीक्षा का खर्च उठाने का ऐलान भी किया था।

बता दें कि दोनों दोस्तों की जोड़ी ने हाल ही में शराब के कारण पंजाब में हुई मौतों में जान गंवाने वाले तरनतारन के एक रिक्शा चालक सुखदेव सिंह के अनाथ हुए बच्चों के सुरक्षित भविष्य का प्रबंध करते हुए अबोहर स्थित मातृ छाया अनाथ आश्रम में चारों बच्चों करणबीर (13), गुरप्रीत (11), अर्शप्रीत (9) व संदीप (5) के रहने, खाने, पीने व शिक्षा दीक्षा का प्रबंध किया था। हालांकि उसके बाद पंजाब सरकार ने भी प्रभावित बच्चों को 10 लाख रुपये मुआवजा देने का ऐलान कर दिया।

इसके चलते उक्त बच्चों के चाचा व उनके परिवार उनके पालन पोषण के लिए आगे आया है। इस पर खुशी जताते हुए सोनू सूद ने कहा कि अपने परिवार के बीच में ही पालन पोषण होना बच्चों के सुखद भविष्य की गारंटी है। फिर भी उन्होंने उन बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमेशा उनका ख्याल रखने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि वह बच्चों की शिक्षा दीक्षा पूरी होने तक उनकी हर जरूरत पर ध्यान देंगे और कहीं से भी मदद न मिली, तो वह अपनी तरफ से उनकी जरूरत को पूरा करेंगे। सोनू सूद के इस ऐलान पर खुशी का इजहार करते हुए उनके दोस्त एवं मूल रूप से फाजिल्का निवासी एवं पीएचडी चैम्बर्स आफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज पंजाब चेप्टर के चेयरमैन करण गिलहोत्रा ने कहा कि बच्चों को अनाथालय में दाखिला दिलाने और उनकी शिक्षा दीक्षा का खर्च उठाने का मकसद केवल यही था कि बच्चों का भविष्य संवरे, अब भले ही उनके चाचा ने बच्चों की देखरेख की जिम्मेवारी ली है लेकिन अब वह और सोनू सूद अपनी जिम्मेवारी समाप्त होने के बावजूद बच्चों की परवरिश का ख्याल जरूर रखेंगे ताकि उनके आगे बढ़ने में कोई परेशानी न हो।

वहीं बाल सुरक्षा विभाग के तरनतारन से अधिकारी राजेश कुमार व फाजिल्का के प्रभारी कौशल परूथी ने बताया कि सोनू सूद और उनके मित्र श्री गिलहोत्रा का संकल्प अन्य समाजसेवियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनेगा। उन्होंने बताया कि उक्त चारों बच्चों को उनके चाचा के परिवार को सौंप दिया गया है। परिवार ने भी सोनू सूद का आभार प्रकट किया है और भविष्य में जरूरत पड़ने पर उनसे मदद की बात कही है।

पंजाब कौशल विकास मिशन के अंतर्गत 415 नशा पीड़ितों को छह जिलों में विशेष प्रोग्राम के द्वारा कौशल प्रशिक्षण दिया गया- चन्नी

■ चंडीगढ़/ब्यूरो

पंजाब कौशल विकास मिशन की तरफ से राज्य में नशा पीड़ितों के लिए एक विशेष कौशल प्रशिक्षण प्रोग्राम की शुरूआत की गई है। यह विशेष प्रोग्राम अब तक छह जिलों में लागू किया जा चुका है। यह जानकारी देते हुये आज यहाँ रोज़गार सृजन और प्रशिक्षण मंत्री श्री चरनजीत सिंह चन्नी ने बताया कि यह प्रोग्राम मोगा, लुधियाना, फरीदकोट, फाजिल्का, फिरोजपुर और तरन तारन जिलों में शुरू किया गया था।

कोविड -19 के बाद सभी जिलों में नशा पीड़ितों के लिए विशेष कौशल विकास प्रशिक्षण प्रोग्राम की होगी शुरूआत - मंत्री

श्री चन्नी ने बताया कि पंजाब कौशल विकास मिशन के अंतर्गत 415 नशा पीड़ितों को प्रशिक्षण दिया गया है जिनमें से 378को प्रमाण-पत्र दिए गए हैं और 144 को रोज़गार दिया जा चुका है। उन्होंने आगे कहा कि 765 और नशा पीड़ित अभी भी कौशल प्रशिक्षण अधीन हैं परन्तु कोविड 19 के फैलने के कारण उनकी प्रशिक्षण रोक दिया गया है।

मंत्री ने आगे कहा कि कोविड-19 के बाद यह विशेष कौशल विकास प्रशिक्षण प्रोग्राम अन्य जिलों में भी चलाया जायेगा। इससे नशा करने वालों को मुख्य धारा में लाया जायेगा जिससे वह खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकें। इस विशेष कौशल प्रशिक्षण प्रोग्राम संबंधी जागरूकता फैलाने के लिए पी.एस.डी.एम ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग को सभी ओट, नशा छुड़ाओ और पुनर्वास केन्द्रों में प्रदर्शित करने के लिए आई.ई.सी सामग्री उपलब्ध करवाई है जिससे और ज्यादा रुचि रखने वाले नशाखोर कौशल विकास सम्बन्धी कोर्सों के लिए आवेदन दे सकें।

श्री चन्नी ने बताया कि पीएसडीएम 12 विभिन्न पेशों में नशा पीड़ित उम्मीदवारों को कौशल का प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है इनमें डीटीएच सैट टाप बॉक्स इंस्टालेशन टैकनीशियन, प्लम्बर जनरल, रिटेल ट्रेनी एसोसिएट, इलैक्ट्रिकल टैकनीशियन, सोलर पैनल टैकनीशियन, हाउसकीपर कम कुक, एअरलाईन रिजरवेशन एजेंट, फील्ड टैकनीशियन कम्प्यूटिंग पैरीफिरलज़, फील्ड टैकनीशियन अन्य घरेलू उपकरण और फील्ड टैकनीशियन नैटवर्किंग स्टोरेज आदि शामिल हैं। रोज़गार सृजन विभाग के सचिव श्री राहुल तिवाड़ी ने बताया कि पीएसडीएम के चार प्रमाणित प्रशिक्षण हिस्सेदार - लार्ड गणेशा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलोजी, आई.आई.ए.ई ऐजूकेशनल सोसायटी, रोज़ैंट सॉफ्टवेयर और विद्याकेयर इस विशेष लक्ष्य वाले समूह को कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि इन बैचों में पीएसडीएम ने उनको रोज़गारमुखी शिक्षा के ज़रिये मुख्य धारा में लाने की कोशिश की है और हर बैच के 50:50 के अनुपात में साधारण उम्मीदवारों के साथ प्रशिक्षण दिया गया है। श्री तिवाड़ी ने आगे कहा कि पीएसडीएम, रोज़गार ऐंटरप्राईजज़ के ज़िला ब्यूरोज़ (डीबीईईज़) और ज़िला प्रशासन ऐसे नशाखोरी के पीड़ितों के कौशल विकास प्रशिक्षण और रोज़गार के लिए तालमेल से काम कर रहे हैं।

जालंधर में दिन दिहाड़े हो रही है चोरी की घटनाएं

■ जालंधर ब्रीज ब्यूरो

जालंधर शहर में चोरी की घटनाएँ दिन प्रति- दिन बढ़ती जा रही है वहीं गुरुवार को एक महिला से लुटेरे पर्स छीन कर फरार हो गये और बताया जा रहा है की महिला पंजाबी ढाबे के मालिक राजन की पत्नी है।

पुलिस की पूछताश करने के दौरान महिला ने बताया की वह दोपहर को अपने ढाबे से घर सूर्य एन्क्लेव जा रही थी जिस दौरान एक काले रंग की बाइक पर सवार होकर दो युवक आए जिन्होंने उन की स्कूटी के आगे पड़ा पर्स उठा कर बहुत तेजी से फरार हो गए।

महिला ने पुलिस को बताया की पर्स में 40 हजार रुपए के करीब कैश ,गोल्ड एयरिंग्स और कुछ जरूरी दस्तावेजों थे। शिकायत के बाद पुलिस डिवी ?न छोटी बारादरी पुलिस ने मामला दर्ज करके आरोपियों की तलाश शुरू कर दी हैं।

वोटर सूचियों के विशेष संशोधन में अहम भूमिका निभाएगा टोल फ्री हेल्प लाईन नंबर 1950- सी.ई.ओ. डा. राजू

■ चंडीगढ़/ब्यूरो

भारतीय चुनाव आयोग की हिदायतों के मुताबिक, 01.01.2020 को वोटर के तौर पर नाम दर्ज करवाने के लिए योग्य होने वाले योग्य वोटरों के नाम दर्ज करने के लिए कार्यालय मुख्य चुनाव अधिकारी, पंजाब द्वारा वोटर फोटो सूची में विशेष संशोधन करने सम्बन्धी प्रक्रिया का शड्यूल तैयार किया गया है। इस प्रक्रिया से नागरिकों को अपने आप को वोटर के तौर पर रजिस्टर करने और वोटर सूची के विवरणों की तस्दीक करने का मौका मिलेगा। मौजूदा कोविड संकट के मद्देनजर टोल फ्री हेल्प लाईन नंबर 1950 वोटर सूचियों के विशेष संशोधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। वोटर सूचियों को दुरुस्त करने और सभी योग्य नागरिकों के नाम सूची में दर्ज किये जाने को यकीनी बनाने के उद्देश्य से सभी राज्यों /केंद्र शासित प्रदेशों में हर साल के आखिर में विशेष संशोधन किया जाता है। वह लोग जो अपने आप को वोटर के तौर पर रजिस्टर नहीं कर सके और वोटर सूचियों में जिनके विवरणों में त्रुटियां हैं या किसी अन्य हलके में प्रवास कर चुके हैं, योग्यता की तारीख 01 जनवरी, 2021 से सूची को विशेष संशोधन का प्रयोग कर सकते हैं भाव जिनकी उम्र तारीख 01.01.2021 को या इससे पहले 18साल की पूरी हो चुकी है या पूरी होने वाली है।

31.08.2020 तक ऑनलाइन / ऑफलाईन प्राप्त किये फार्मों को वोटर सूची में शामिल किया जायेगा, जो 16.11.2020 को जारी की जायेगी। दावे और ऐतराज़ 16.11.2020 से 15.12.2020 तक प्राप्त किये जाएंगे। 21.11.2020, 22.11.2020, 05.12.2020 और 06.12.2020 को सभी पोलिंग स्टेशनों पर विशेष कैंप भी लगाए जाएंगे। इस सम्बन्धी विवरण देते हुये डा. एस. करुणा राजू, मुख्य चुनाव अधिकारी, पंजाब ने कहा, 'बूथ स्तर अधिकारी (बी.एल.ओज़) भारतीय चुनाव आयोग के मुख्य अधिकारियों के तौर पर काम करते हैं। वह अपने क्षेत्र की वोटर सूचियों के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार हैं क्योंकि वह भारतीय चुनाव आयोग की तरफ़ से तस्दीक के लिए एकमात्र ज़रिया हैं परन्तु कोविड -19 के चलते कई चुनौतियां खड़ी हो गई हैं। इन हालातों पर काबू पाने के लिए हम प्रौद्योगिकी का प्रभावशाली ढंग से प्रयोग करने और इस प्रोग्राम को और मज़बूत और कारगर बनाने का फ़ैसला किया है।'

अतिरिक्त मुख्य चुनाव अधिकारी माधवी कटारिया ने कहा, 'कोरोना वायरस के मौजूदा संकट के कारण हमारे नज़रिए और चुनाव अमले के कामकाज में बड़ा बदलाव आऐगा जिससे हमें प्रौद्योगिकी के प्रयोग के साथ नये सिरे से सोचने और एकजुट होकर काम करने का सामर्थ्य मिलेगा।'

नागरिक अपने चुनाव विवरणों की टोल फ्री हेल्प लाईन नं. 1950, मोबाइल एप, (वोटर हैल्पलाइन), नेशनल वोटर सर्विस पोर्टल (nvsp.in) पर ऑनलाइन तस्दीक कर सकते हैं। इसके अलावा, वह कॉमन सर्विस सैंटरों (सीएससी) में जा सकते हैं या भरे गए फार्म की कॉपी बीएलओज़ के पास जमा करवा सकते हैं। नागरिक अपने विवरणों को प्रमाणित कर सकते हैं और किसी अधिकारित दस्तावेज़ - आधार कार्ड, स्थायी खाता नंबर (पैन) कार्ड, ड्राइविंग लायसेंस, पासपोर्ट, किसी मान्यता प्राप्त बैंक या डाकघर द्वारा जारी की गई पासबुक, सेवामुक्त कर्मचारियों का पैनशन दस्तावेज़ (फोटो समेत), केंद्र राज्य सरकार द्वारा जारी सर्विस आईडी कार्ड, मनरेगा जोब कार्ड, श्रम और रोज़गार मंत्रालय द्वारा जारी स्वास्थ्य बीमा स्मार्ट कार्ड, चुनाव अमले द्वारा जारी प्रमाणित फोटो वोटर स्लिप या चुनाव आयोग के द्वारा प्रवानित अन्य दस्तावेज़ जमा करवा कर वोटरों के तौर पर अपना नाम दर्ज करवा सकते हैं। मुख्य चुनाव अधिकारी ने समूह डिप्टी कमिशनरों -कम -ज़िला चुनाव अधिकारियों को वोटर सूचियों का संशोधन करने और समय -समय पर अपनी टीमों की निगरानी करने के निर्देश दिए गए हैं। मुख्य चुनाव अधिकारी, पंजाब मान्यता प्राप्त राजनैतिक पार्टियों को हर पोलिंग स्टेशन के लिए बूथ स्तर एजेंटों (बी.एल.ए.) की पहचान करने और नियुक्त करने के लिए प्रेरित करेंगे जो बी.एल.ओज़ के साथ वोटर सूचियों में किये सुधारों और संशोधन की जांच करेगा।

डिप्टी कमिश्नर दफ्तर के बाहर जॉइंट एक्शन समिति के कर्मचारियों ने पंजाब सरकार के खिलाफ किया प्रदर्शन

■ जालंधर ब्रीज/ब्यूरो

डिप्टी कमिश्नर दफ्तर के बाहर पंजाब सरकार के खिलाफ जॉइंट एक्शन समिति ने प्रदर्शन किया और साथ में उन्होंने कहा की सभी मुलाजिमों ने 19 अगस्त से 21 अगस्त 2020 तीन दिन की अपनी छुट्टी सरकार को भेज दी है और रोज हड़ताल के साथ साथ वह हर एक जिले में सरकार के खिलाफ अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन करेंगे जिसमे मुख्य रूप से पुराणी पेंशन स्कीम को लागु करना ,पे कमीशन लागु करना ,पिछला पड़ा हुआ डी ए की किश्त को जल्द से जल्द देना और साथ ही उन्होंने कहा की सरकारी कर्मचारियों ने निराधार करना उन्हें कभी मंजूर नहीं होगा ।

यूनियन ने प्रदर्शन के साथ डिप्टी कमिश्नर दफ्तर से लेकर डिविजनल दफ्तर तक रोस मार्च भी निकाला और सरकार खिलाफ नारेबाजी भी की।

इस मौके पर प्रधान सुखजीत सिंह, तेजिंदर सिंह अमनदीप सिंह, बख्शीश सिंह ,मुनीश कुमार, गणेश भगत, इंदरदीप सिंह कोहली, किरपाल सिंह, प्रेम मेहता, बलजीत कुमार, संजीव भंडारी, विजय कुमार आदि अन्य कर्मचारी शामिल थे ।

धोनी क्रिकेट के महान खिलाड़ियों में से एक और महानतम कप्तानों में से एक–शाहीदी अफरीदी

SPORTS PLANET
स्पोर्ट्स प्लैनट

पाकिस्तान क्रिकेट जगत ने बांधे महेंद्र सिंह धोनी की तारीफों के पुल, बताया शानदार खिलाड़ी और कप्तान

■ कराची/ब्यूरो

पाकिस्तान के क्रिकेट समुदाय ने एक सुर में महेंद्र सिंह धोनी की तारीफ करते हुए उन्हें भारत के महानतम कप्तानों में से एक और खेल को अपने तरीके से प्रभावित करने वाला खिलाड़ी बताया। शनिवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा करने वाले धोनी की कप्तानी में भारत ने टी20 विश्व कप, 50 ओवर का विश्व कप और चैंपियन्स ट्रॉफी का खिताब जीता जबकि टेस्ट क्रिकेट में दुनिया की नंबर एक टीम भी बना। इंजमाम उल हक, बासित अली, वसीम अकरम, वकार यूनिस, मुदस्सर नजर, शाहिद अफरीदी और कई अन्य ने धोनी की सराहना की। पाकिस्तान के लिए सबसे अधिक मैच खेलने वाले क्रिकेटर इंजमाम ने कहा, ''मेरी नजर में वह भारत के महानतम क्रिकेट कप्तानों में से एक है। असली मैच विजेता जिसके खिलाफ खेलने का मैंने काफी लुत्फ उठाया।''

राशिद लतीफ का मानना है कि भारतीय क्रिकेट में धोनी की विरासत को हमेशा याद रखा जाएगा लेकिन उसके संन्यास का मतलब है कि विराट कोहली अब अपनी विरासत तैयार कर सकता है। राशिद ने कहा, ''शानदार खिलाड़ी और कप्तान। उसमें खेल को सटीकता के साथ पढ़ने की क्षमता थी और प्रत्येक स्थिति के अनुसार अपने खिलाड़ियों का इस्तेमाल करता था और वह परफेक्ट फिनिशर था।'' पूर्व टेस्ट सलामी बल्लेबाज मुदस्सर ने कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं कि धोनी खेल के सर्वश्रेष्ठ फिनिशर में से एक है। उन्होंने कहा, ''मैंने पहली बार उसे तब देखा जब मैं कीनिया को कोचिंग दे रहा था।

नैरोबी में त्रिकोणीय टूर्नामेंट था और धोनी ने लगातार दो शतक लगाए। लेकिन तब मुझे नहीं पता था कि वह भारतीय क्रिकेट और विश्व क्रिकेट पर इतना बड़ा असर छोड़ेगा।'' शीर्ष बल्लेबाज मोहम्मद यूसुफ ने कहा कि कप्तान और विकेटकीपर के रूप में रन बनाने की धोनी की क्षमता शानदार थी।

उन्होंने कहा, ''उसने अलग-अलग स्थानों पर बल्लेबाजी की और हमेशा नतीजा दिया। मुझे 2011 विश्व कप के फाइनल में उसकी पारी याद है। यह मास्टर स्ट्रोक थी जिस तरह वह बल्लेबाजी क्रम में खुद को ऊपर लाए और विजयी छक्का जड़ा।'' बासित अली ने कहा कि उन्होंने अपने करियर में कभी धोनी से अधिक विविधता वाला खिलाड़ी नहीं देखा। उन्होंने कहा, ''भारत और चेन्नई सुपरकिंग्स के लिए उसका रिकॉर्ड देखिए, वह शानदार है। जब वह 2016 और 2017 में पुणे के लिए खेला तो उनकी टीम ने आईपीएल फाइनल में जगह बनाई। किसी भी टीम पर उसका प्रभाव इस तरह का था।'' पूर्व टेस्ट सलामी बल्लेबाज और मुख्य चयनकर्ता मोहसिन खान ने कहा कि धोनी का सबसे बड़ा योगदान यह रहा कि उन्होंने ऐसी टीमों की कप्तानी की जिसमें शीर्ष सीनियर खिलाड़ी मौजूद थे और साथ ही युवा खिलाड़ियों को निखारा और प्रोत्साहित किया। पूर्व कप्तान और विकेटकीपर मोइन खान ने कहा, ''निजी तौर पर मुझे वह काफी रोमांचक और स्तरीय खिलाड़ी लगा जो प्रभाव छोड़ने वाले खिलाड़ी की परिमें फिट बैठता है।''

आक्रामक आलराउंडर शाहिद अफरीदी ने भी ट्वीट करके धोनी की तारीफ की और उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। अफरीदी ने लिखा, ''खेल के महान खिलाड़ियों में से एक और महानतम कप्तानों में से एक।

कोरोना वायरस के कारण भारत में होने वाली मुक्केबाजी की एशियाई चैंपियनशिप स्थगित

■ नई दिल्ली/ब्यूरो

भारत में नवंबर-दिसंबर में होने वाली एशियाई मुक्केबाजी चैंपियनशिप को कोविड-19 महामारी से जुड़ी स्थिति के कारण अगले साल के लिए स्थगित कर दिया गया है। मुक्केबाजी महासंघ के महासचिव जय कोवली ने मंगलवार को यह जानकारी दी। एशियाई मुक्केबाजी परिसंघ (एएसबीसी) की कार्यकारी समिति की सोमवार को आनलाइन हुई बैठक में यह फैसला किया गया। एएसबीसी की कार्यकारी समिति के सदस्य कोवली ने बताया, ''महामारी के कारण मौजूदा हालात को देखते हुए टूर्नामेंट को स्थगित करने का प्रस्ताव रखा गया और इसे स्वीकार कर लिया गया। भारत मेजबान बरकरार रहेगा और टूर्नामेंट अब 2021 में होगा।'' उन्होंने कहा, ''2021 की विंडो पर नवंबर में कार्यकारी समिति की अगली बैठक में चर्चा की जाएगी।''

भारत ने पिछली बार पुरुष एशियाई चैंपियनशिप की मेजबानी मुंबई में 1980 में की थी जबकि महिला टूर्नामेंट का आयोजन हिसार में 2003 में किया था। पिछले साल इसे पुरुष और महिला वर्ग की संयुक्त प्रतियोगिता बनाया गया। कोविड-19 महामारी के कारण दुनिया भर में खेल कैलेंडर अस्त व्यस्त हो गया है और कई बड़ी खेल प्रतियोगिताएं स्थगित हो चुकी हैं जिसमें ओलंपिक और टी 20 क्रिकेट विश्व कप भी शामिल है। कोवली ने कहा, ''हमें सतर्क रहना होगा, हर जगह संक्रमण के मामलों में इजाफा हो रहा है। जब तक यह तय नहीं होता कि मामलों में गिरावट आ रही है तब तक चीजों पर रोक लगाना ही सर्वश्रेष्ठ है।'' उन्होंने कहा, ''एएसबीसी ने फैसला किया है कि सिर्फ एक प्रतियोगिता की संभावना है, संभवत: नवंबर में चीन में जिसमें सिर्फ शीर्ष मुक्केबाज हिस्सा लेंगे जिससे कि प्रतिस्पर्धियों की संख्या को कम रखा जा सके। लेकिन यह सिर्फ प्रस्ताव है, ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी।'' भारत में संक्रमण के मामलों की संख्या 25 लाख के पार पहुंच चुकी है जबकि मरने वालों की संख्या 50 हजार के पार है। ट्रेनिंग शिविरों की शुरूआत के साथ हालांकि खेलों को बहाल करने की दिशा में छोटा कदम उठाया गया है। पटियाला में शिविर के लिए कुछ मुक्केबाज जुटे हैं और यह शिवि‍र अब तक सही चल रहा है। भारत के नौ मुक्केबाज अब तक तोक्यो ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुके हैं जिसमें पांच पुरुष और चार महिला शामिल हैं।

61 बेरोजगार खिलाड़ियों को वित्तीय सहायता मुहैया कराएगा हॉकी इंडिया

■ नई दिल्ली/ब्यूरो

हॉकी इंडिया ने मंगलवार को घोषणा की कि वह 34 महिलाओं सहित 61 बेरोजगार खिलाड़ियों को मौजूदा कोविड-19 महामारी के बीच वित्तीय सहायता मुहैया कराएगा जिससे कि उनकी खेल गतिविधियों में वापसी में मदद हो सके। जिन खिलाड़ियों के पास नौकरी नहीं है उन्हें महामारी के कारण समस्या का सामना करना पड़ रहा है और इसका उन पर प्रतिकूल असर पड़ा है। इस पहल के तहत प्रत्येक खिलाड़ी को 10 हजार रुपये दिए जाएंगे। प्रेस विज्ञप्ति में हॉकी इंडिया के कार्यवाहक अध्यक्ष ज्ञानेंद्रो निंगोमबाम के हवाले से कहा गया, ''कोविड-19 के साथ मौजूदा लड़ाई का उन खिलाड़ियों पर प्रतिकूल असर पड़ा है जिनके पास नौकरी नहीं है, उनके लिए खेल गतिविधियां शुरू कर पाना मुश्किल है क्योंकि उनका परिवार वित्तीय संकट का सामना कर रहा है।'' उन्होंने कहा, ''हॉकी इंडिया उन्हें तुरंत राहत पहुंचाने का तरीका ढूंढ रहा था और हमने फैसला किया है कि इस मुश्किल समय में प्रत्येक खिलाड़ी को 10 हजार रुपये की वित्तीय सहायता देंगे जिसका मतलब होगा कि उनके परिवार पर अतिरिक्त बोझ नहीं पड़ेगा क्योंकि वे निकट भविष्य में खेल गतिविधियां फिर शुरू करने की तैयारी कर रहे हैं।'' इस पहल का उद्देश्य खिलाड़ियों को जरूरी वित्तीय सहायता मुहैया कराना है। सीनियर और जूनियर पुरुष तथा महिला कोर संभावित खिलाड़ियों में लगभग 61 लोगों को इस पहल के तहत फायदा होगा जिसमें 30 जूनियर महिला, 26 जूनियर पुरुष, चार सीनियर महिला और एक सीनियर पुरुष टीम का कोर संभावित खिलाड़ी शामिल है। निंगोमबाम ने कहा, ''हम उम्मीद करते हैं कि इस सहायता से खिलाड़ियों की जल्द ही खेल गतिविधियां शुरू करने में मदद होगी।

Printed, Published & Owner by ATUL SHARMA & Printed at SARANGLE PRINTERS, BASTI GUZAN JALANDHAR (PUNJAB) and Published from ATUL SHARMA, NN-453 GOPAL NAGAR JALANDHAR (PUNJAB)
Editor: ATUL SHARMA*
*Responsible for selection of News under the PRB ACT. PUNHIN/2019/77863, All Rights Reserved. Reproduction in whole or in part without permission is prohibited. All disputes shall be settled at Jalandhar jurisdiction only.